अध्याय 7: कवितावली / लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप

विषय-सूची 2 प्रश्नावली · 12 प्रश्न

प्रश्नावली 7.1	पाठ के साथ	8 प्रश्न
प्रश्नावली 7.2	पाठ के आसपास	4 प्रश्न

प्रश्नावली 7.1 — पाठ के साथ

प्रश्न 1

कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

हल

तुलसीदास ने कवितावली के तीन छंदों में अपने युग की आर्थिक विषमता का सजीव और मार्मिक चित्रण किया है।
पहले छंद में वे समाज के विभिन्न वर्गों का उल्लेख करते हैं — किसबी (कारीगर), किसान, बनिक (व्यापारी), भिखारी, भाट, चाकर, नट, चोर, चार, चेटकी — सभी पेट की आग बुझाने के लिए कठिन से कठिन और यहाँ तक कि अधर्म के काम भी करते हैं।
उनका कथन है: 'पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी' — अर्थात् पेट भरने के लिए लोग अपनी संतानों को भी बेचने पर विवश हैं। यह तुलसी-युग की गहरी आर्थिक त्रासदी है।
दूसरे छंद में वे कहते हैं: 'खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि, बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी' — किसान को खेती नहीं, भिखारी को भीख नहीं, व्यापारी को व्यापार नहीं, नौकर को नौकरी नहीं।
यह पंक्तियाँ बेरोज़गारी और अकाल की भयावहता को दर्शाती हैं। 'दारिद-दसानन दबाई दुनी' — दरिद्रता को दस सिर वाले रावण की उपमा देकर तुलसी ने दिखाया कि गरीबी एक राक्षस की तरह समाज को दबोच रही है।
तीसरे छंद में तुलसी स्वयं अपनी स्थिति में भी आर्थिक अनिश्चितता को स्वीकार करते हैं: 'माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो' — भीख माँगकर खाना और मस्जिद में सोना।
इस प्रकार तुलसीदास ने युग की आर्थिक विषमता, बेकारी, अकाल और गरीबी को अत्यंत यथार्थपरक ढंग से चित्रित किया है।

उत्तर: तुलसीदास ने कवितावली के छंदों में युग की आर्थिक विषमता को यथार्थपरक ढंग से चित्रित किया है — किसान को खेती नहीं, व्यापारी को व्यापार नहीं, भिखारी को भीख नहीं; लोग पेट भरने के लिए संतानें बेचने तक मजबूर हैं और दरिद्रता दसानन (रावण) की तरह समाज को दबोचे हुए है।

प्रश्न 2

पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है — तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

हल

तुलसी का काव्य-सत्य: 'तुलसी बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें, आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी।' — पेट की आग समुद्र की अग्नि (बड़वाग्नि) से भी बड़ी है, और उसे बुझाने वाला केवल राम रूपी मेघ है।

तुलसी के युग में: उस काल में बेरोज़गारी, अकाल और सामाजिक विषमता से त्रस्त जनता के लिए राम-भक्ति एकमात्र सहारा और शांति का स्रोत थी। भक्ति ने आंतरिक शक्ति और सामाजिक एकता दी।

आज के संदर्भ में: आज के युग में भी भूख, बेरोज़गारी और आर्थिक असमानता की समस्या बनी हुई है। इस दृष्टि से 'पेट की आग' का यथार्थ आज भी सत्य है।

परंतु आधुनिक युग में 'पेट की आग' का समाधान केवल ईश्वर-भक्ति से नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक सुधारों, रोज़गार, शिक्षा और सरकारी नीतियों से भी होता है।

अतः तुलसी का यह काव्य-सत्य आंशिक रूप से आज भी प्रासंगिक है — भक्ति आंतरिक संबल देती है, किंतु भौतिक समस्याओं का समाधान भौतिक उपायों से भी आवश्यक है।

निष्कर्ष: तुलसी का यह काव्य-सत्य आज आत्मिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर तो युग-सत्य है, किंतु व्यावहारिक और भौतिक स्तर पर इसे आधुनिक समाधानों के साथ जोड़कर देखना होगा।

उत्तर: तुलसी का यह काव्य-सत्य आंशिक रूप से आज भी सत्य है। भूख और आर्थिक विषमता की समस्या आज भी बनी है, और ईश्वर-भक्ति आंतरिक शक्ति देती है; किंतु आधुनिक युग में इसका समाधान सामाजिक-आर्थिक सुधारों और रोज़गार से भी जुड़ा है।

प्रश्न 3

तुलसी ने यह कहने की जरूरत क्यों समझी? — 'धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ / काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।' इस सवैया में 'काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब' कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता?

हल

तुलसी के युग में जाति-पाँत और ऊँच-नीच की कठोर व्यवस्था थी। तुलसीदास की जाति और कुल को लेकर समाज में संदेह और आक्षेप लगाए जाते थे।

इस सवैया में तुलसी ने घोषणा की है कि वे राम के सेवक हैं; कोई उन्हें धूर्त कहे, अवधूत कहे, राजपूत कहे या जुलाहा — उन्हें कोई आपत्ति नहीं।

वे कहते हैं कि वे न किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह करेंगे, न किसी की जाति बिगाड़ेंगे — अर्थात् वे समाज से अलग, स्वतंत्र, राम-भक्ति में लीन हैं।

यह सवैया कहना इसलिए जरूरी था ताकि जाति-आधारित आरोपों से तुलसी अपनी रक्षा कर सकें और भक्ति की श्रेष्ठता सिद्ध कर सकें।

यदि 'काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब' कहा जाता: तब इसका अर्थ होता कि वे पुत्री की दृष्टि से भी सावधान हैं। 'बेटीसों बेटा न ब्याहब' कहने पर समाज में लड़के-लड़की दोनों की स्थिति में असमानता झलकती है — इसमें पितृसत्तात्मक समाज की झलक है जहाँ लड़की को लेकर चिंता अधिक है। 'बेटासों बेटी न ब्याहब' कहते तो भी वही भाव आता, पर सामाजिक दृष्टि से बेटियों के प्रति और अधिक रक्षात्मक भाव प्रकट होता।

वास्तव में तुलसी जाति-व्यवस्था से ऊपर उठकर राम-भक्ति की सर्वोच्चता प्रतिपादित करना चाहते थे — यही इस सवैया का मूल प्रयोजन है।

उत्तर: तुलसी ने यह कहना इसलिए जरूरी समझा क्योंकि जाति-पाँत के आरोपों से स्वयं को मुक्त करते हुए राम-भक्ति की सर्वोच्चता सिद्ध करनी थी। 'काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब' कहने पर पुत्री के संदर्भ में और अधिक रक्षात्मक पितृसत्तात्मक भाव प्रकट होता, जो सामाजिक अर्थ को थोड़ा बदल देता।

प्रश्न 4

'धूत कहौ...' वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखलाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

हल

इस सवैया की भाषा सरल और लहजा विनम्र जान पड़ता है — तुलसी कहते हैं कि कोई कुछ भी कहे, वे बस माँगकर खाएँगे और मस्जिद में सोएँगे।

परंतु इस सरल भाषा के भीतर गहरा स्वाभिमान छिपा है।

वे जाति-भेद, सामाजिक प्रतिष्ठा और लोक-निंदा की परवाह नहीं करते: 'तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।'

यहाँ 'गुलाम' शब्द विनम्रता का सूचक है, किंतु 'जाको रुचै सो कहै' में एक दृढ़ स्वाभिमान है — कोई जो चाहे कहे, मुझे परवाह नहीं।

'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' — न लेने का लालच, न देने का भार; यह वैराग्य और आत्मनिर्भरता का प्रतीक है।

तुलसी ने जाति-आधारित अपमान का उत्तर दीन होकर नहीं, बल्कि राम-भक्ति की आड़ में दृढ़ आत्मसम्मान से दिया है।

हम इससे पूरी तरह सहमत हैं। यह छंद भक्ति की ओट में एक स्वाभिमानी विद्रोह है — समाज की जाति-व्यवस्था को सीधे नकारते हुए राम-भक्त होने को अपनी पहचान बनाना।

उत्तर: इस कथन से पूर्णतः सहमति है। 'धूत कहौ...' छंद में तुलसी ऊपर से सरल और वैरागी दिखते हैं, किंतु भीतर से वे एक स्वाभिमानी भक्त हैं जो जाति-भेद और सामाजिक अपमान को राम-भक्ति के आत्मविश्वास से नकारते हैं।

प्रश्न 5

व्याख्या करें — (क) मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता। जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू॥ (ख) जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना। अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही॥ (ग) माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ॥ (घ) ऊँचे नीचे करम, धरम-अधरम करि, पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी॥

हल

(क) मम हित लागि तजेहु पितु माता... — प्रसंग: लक्ष्मण को शक्ति-बाण लगने के बाद राम विलाप कर रहे हैं।

अर्थ: 'मेरे लिए तुमने माता-पिता को त्याग दिया, जंगल में ठंड, धूप और आँधी-तूफान सहे।'

'जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू' — यदि मुझे पहले पता होता कि वन में भाई का वियोग होगा, तो मैं पिता की आज्ञा नहीं मानता।

भाव: राम का यह वचन उनके भाई के प्रति गहरे प्रेम और पश्चाताप को दर्शाता है। वे मानवीय भावना में डूबे हुए हैं — ईश्वरत्व नहीं, भाई का प्रेम बोल रहा है।

(ख) जथा पंख बिनु खग अति दीना... — 'जैसे बिना पंख के पक्षी अत्यंत दीन होता है, बिना मणि के साँप निर्बल होता है, बिना सूँड़ के हाथी कमजोर होता है।'
'अस मम जिवन बंधु बिनु तोही' — तुम्हारे बिना मेरा जीवन उसी प्रकार दीन और निर्बल है।
'जौं जड़ दैव जिआवै मोही' — यदि मूर्ख विधाता मुझे जीवित रखे, तब भी मेरा जीवन अधूरा ही रहेगा।
भाव: राम ने उपमा अलंकार के माध्यम से भाई के बिना अपने जीवन की निरर्थकता को अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है।

(ग) माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ — यह कवितावली के 'धूत कहौ...' सवैया की पंक्ति है।
अर्थ: 'माँगकर खाऊँगा, मस्जिद में सोऊँगा — न लेने की लालसा (एक भी नहीं), न देने का बोझ (दोनों में से कुछ नहीं)।'
भाव: तुलसी ने यहाँ वैराग्य और निरपेक्षता का भाव व्यक्त किया है। वे जाति-बंधन से मुक्त होकर केवल राम-भक्ति में जीना चाहते हैं। 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' में निर्लिप्तता और आत्मसम्मान दोनों हैं।

(घ) ऊँचे नीचे करम, धरम-अधरम करि, पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी — यह कवितावली के पहले छंद की पंक्ति है।
अर्थ: 'ऊँचे-नीचे कर्म करके, धर्म और अधर्म की परवाह किए बिना, केवल पेट भरने के लिए संघर्ष करते हैं; यहाँ तक कि बेटा-बेटी को भी बेच डालते हैं।'
भाव: तुलसी ने युग की आर्थिक विपन्नता को बेहद मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। 'पेट की आग' इतनी भीषण है कि मनुष्य अपनी नैतिक सीमाएँ तोड़ देता है और अपनी संतानें तक बेचने पर विवश हो जाता है।

उत्तर: (क) राम का भाई के प्रति गहरा प्रेम और पश्चाताप — 'यदि वन में भाई-वियोग का पता होता, पिता की आज्ञा न मानता।' (ख) उपमाओं के माध्यम से भाई के बिना जीवन की निरर्थकता। (ग) तुलसी का वैराग्य और निरपेक्षता — भीख माँगकर जीना, जाति-बंधन से मुक्त। (घ) युग की आर्थिक विपन्नता — पेट की आग में मनुष्य संतानें तक बेचने पर विवश।

प्रश्न 6

भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

हल

हाँ, हम इस कथन से पूर्णतः सहमत हैं।
लक्ष्मण-मूर्च्छा प्रसंग में तुलसीदास ने राम को एक ईश्वर के रूप में नहीं, बल्कि एक विक्षिप्त भाई के रूप में चित्रित किया है।
राम का विलाप: 'अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायऊ।' — आधी रात हो गई, हनुमान नहीं आए; राम उठकर लक्ष्मण को हृदय से लगाते हैं।
वे कहते हैं: 'मम हित लागि तजेहु पितु माता' — यह एक भाई का पश्चाताप है, ईश्वर की लीला नहीं।

'जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई' — 'अयोध्या किस मुँह से जाऊँगा?' — यह एक लज्जित और पीड़ित मानव का भाव है।

'बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं' — यहाँ राम ने स्त्री की तुलना में भाई को अधिक मूल्यवान माना, जो कि एक सामान्य मनुष्य के भाव हैं।

तुलसी ने स्वयं कहा है: 'उमा एक अखंड रघुराई। नर गति भगत कृपाल देखाई।' — ईश्वर होते हुए भी राम ने मनुष्य की तरह आचरण किया, ताकि भक्त उनसे जुड़ सकें।

इस प्रकार यह प्रसंग 'नर लीला' नहीं, सच्ची मानवीय अनुभूति है — जिसमें पाठक को ईश्वरीय दूरी नहीं, एक भाई का जीवंत दुख अनुभव होता है।

उत्तर: हाँ, भ्रातृशोक में राम की दशा को तुलसी ने सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। राम का विलाप, पश्चाताप, लज्जा और भाई के प्रति गहरा प्रेम — ये सब मानवीय भाव हैं। तुलसी ने स्वयं कहा कि राम ने 'नर गति' भक्त के लिए दिखाई, ताकि पाठक का हृदय सीधे उनसे जुड़ सके।

प्रश्न 7

शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

हल

लक्ष्मण-मूर्च्छा का पूरा प्रसंग करुण रस से भरा हुआ है — राम का विलाप, वानरों की व्याकुलता, और आधी रात का घना शोक।

'प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर' — राम का प्रलाप सुनकर सारे वानर दल विकल हो गए। यह करुण रस की चरम स्थिति है।

इसी गहरे शोक के बीच हनुमान संजीवनी लेकर लौटते हैं: 'आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ बीर रस।'

तुलसी ने स्वयं इस उपमा में कहा — 'जिमि करुना महँ बीर रस' — जैसे करुण रस के बीच वीर रस का उदय।

हनुमान का अवतरण एक वीर कार्य है — संजीवनी लाने की यात्रा साहस, शक्ति और समर्पण का प्रतीक है।

उनके आते ही माहौल बदल जाता है: लक्ष्मण उठ बैठते हैं, राम प्रसन्न होकर हनुमान से मिलते हैं, वानर-दल हर्षित होता है।

यह करुण से वीर की ओर संक्रमण काव्य-रस की एक अद्भुत परिघटना है — जो जीवन के सत्य को भी प्रकट करती है: गहरे शोक के बीच भी वीरता का संचार होता है और करुण प्रसंग मंगल-विकास की ओर जाता है।

उत्तर: शोक और विलाप से भरे करुण रस के वातावरण में हनुमान का संजीवनी लेकर आना एक वीर कार्य है। उनका अवतरण साहस और समर्पण का प्रतीक है, जो तुरंत शोक को हर्ष में बदल देता है। तुलसी ने इसे 'जिमि करुना महँ बीर रस' कहकर रस-संक्रमण की इस काव्य-परिघटना को अद्भुत ढंग से व्यक्त किया है।

प्रश्न 8

जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई॥ बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं॥ भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?

हल

इन पंक्तियों में राम कह रहे हैं: 'अयोध्या किस मुँह से जाऊँगा — एक स्त्री (सीता) के लिए प्रिय भाई को खो दिया।'

'बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।' — 'संसार में अपयश (कलंक) तो सह लेता, पर स्त्री की हानि कोई विशेष क्षति नहीं है।'

इन वचनों में स्त्री के प्रति एक पितृसत्तात्मक और निम्न सामाजिक दृष्टिकोण परिलक्षित होता है — जहाँ भाई को स्त्री से अधिक मूल्यवान माना गया है।

यह राम के शोक और विक्षिप्तता की स्थिति में निकला प्रलाप है, जो उस युग की सामाजिक मानसिकता को दर्शाता है।

तुलसी-काल में स्त्री की तुलना में भाई, पिता और पुरुष संबंध को अधिक महत्त्व दिया जाता था।

आधुनिक दृष्टि से यह दृष्टिकोण स्वीकार्य नहीं है; स्त्री और पुरुष समान सामाजिक मूल्य के पात्र हैं।

किंतु यह भी ध्यान देने योग्य है कि यह राम का प्रलाप-वचन है — विक्षिप्त मन की उक्ति; इसे राम का सुविचारित कथन नहीं माना जाना चाहिए।

उत्तर: इन प्रलाप-वचनों में उस युग की पितृसत्तात्मक मानसिकता झलकती है, जिसमें भाई को स्त्री से अधिक मूल्यवान माना गया है। आधुनिक दृष्टि से यह दृष्टिकोण असमानतामूलक है। हालाँकि यह राम के शोक-विक्षिप्त मन की उक्ति है, इसे तुलसी के युग की स्त्री-संबंधी सामाजिक सोच का प्रतिबिंब माना जा सकता है।

प्रश्नावली 7.2 — पाठ के आसपास

प्रश्न 1

कालिदास के रघुवंश महाकाव्य में पत्नी (इंदुमती) के मृत्यु-शोक पर अज तथा निराला की सरोज-स्मृति में पुत्री (सरोज) के मृत्यु-शोक पर पिता के करुण उद्गार निकले हैं। उनसे भ्रातृशोक में डूबे राम के इस विलाप की तुलना करें।

हल

तुलसी का भ्रातृशोक: राम का लक्ष्मण के लिए विलाप भाई के प्रति असीम प्रेम, पश्चाताप और असहायता का भाव है। 'अस मम जिवन बंधु बिनु तोही' — भाई के बिना जीवन निरर्थक है। यह विलाप मानवीय अनुभूति की ऊँचाई पर है।

कालिदास का पत्नी-शोक: रघुवंश में राजा अज अपनी पत्नी इंदुमती के अकाल निधन पर विलाप करते हैं। यह दाम्पत्य प्रेम का शोक है — पत्नी के बिना जीवन की कल्पना असंभव लगती है।

निराला की सरोज-स्मृति: निराला अपनी पुत्री सरोज की मृत्यु पर पिता-हृदय की वेदना व्यक्त करते हैं। इसमें पिता का अपराध-बोध, असहायता और पुत्री के प्रति प्रेम घुले-मिले हैं।

तुलनात्मक विश्लेषण: तीनों विलापों में गहरी मानवीय संवेदना है, किंतु शोक के कारण अलग हैं — भाई, पत्नी, पुत्री। राम का विलाप जहाँ शीघ्र हनुमान के आगमन से वीर-भाव में बदलता है, वहीं अज और निराला का शोक स्थायी वियोग का है।

तुलसी का विलाप अधिक गतिशील और प्रसंग-निर्भर है; निराला और कालिदास का विलाप अधिक स्थायी और आत्मनिष्ठ है।

उत्तर: तीनों विलापों में गहरी मानवीय वेदना है। राम का भ्रातृशोक हनुमान के आगमन से वीर-भाव में बदल जाता है; अज का पत्नी-शोक (रघुवंश) और निराला का पुत्री-शोक (सरोज-स्मृति) स्थायी वियोग के शोक हैं। राम का विलाप प्रसंग-निर्भर और गतिशील है, जबकि अन्य दोनों अधिक स्थायी और आत्मनिष्ठ हैं।

प्रश्न 2

'पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी' तुलसी के युग का ही नहीं आज के युग का भी सत्य है। भुखमरी में किसानों की आत्महत्या और संतानों (खासकर बेटियों) को भी बेच डालने की हृदय-विदारक घटनाएँ हमारे देश में घटती रही हैं। वर्तमान परिस्थितियों और तुलसी के युग की तुलना करें।

हल

तुलसी का युग: सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में मुगल शासन के दौरान प्राकृतिक आपदाएँ, अकाल, युद्ध, और शासकीय अत्याचार से जनता आर्थिक विपन्नता में डूबी थी। किसानों की खेती नष्ट होती थी, व्यापार ठप था, और लोग संतानें बेचने तक विवश होते थे।

आज का युग: आज भी कर्ज़ में डूबे किसानों की आत्महत्याएँ, बाल-विवाह, गरीबी में बेटियों की बिक्री और मजदूरों के शोषण की घटनाएँ समाचारों में आती हैं।

समानताएँ: दोनों युगों में गरीबी, भुखमरी और असहायता की स्थिति में परिवार टूटते हैं; संतानें बेची जाती हैं या विवश होकर बाल-श्रम में झोंकी जाती हैं।

अंतर: आज सरकारी योजनाएँ (मनरेगा, पीएम किसान योजना, अनाज वितरण) मौजूद हैं, जो तुलसी-काल में नहीं

थीं। आज की समस्या योजनाओं के क्रियान्वयन और भ्रष्टाचार की है।

तुलसी के पास समाधान केवल राम-भक्ति में था; आज के युग में समाधान सामाजिक-आर्थिक नीतियों और जागरूकता में भी है।

उत्तर: तुलसी और आज दोनों युगों में आर्थिक विपन्नता में संतानें बेची जाती हैं — यह साम्य है। अंतर यह है कि आज सरकारी योजनाएँ और कानूनी सुरक्षा मौजूद है (जो तुलसी-काल में नहीं थी), किंतु क्रियान्वयन की कमी से समस्या बनी है। दोनों युगों में 'पेट की आग' का यथार्थ एक जैसा है।

प्रश्न 3

राम कौशल्या के पुत्र थे और लक्ष्मण सुमित्र के। इस प्रकार वे परस्पर सहोदर (एक ही माँ के पेट से जन्मे) नहीं थे। फिर, राम ने उन्हें लक्ष्य कर ऐसा क्यों कहा — 'मिलइ न जगत सहोदर भ्राता'? इस पर विचार करें।

हल

राम और लक्ष्मण एक ही माँ के पुत्र नहीं थे — राम कौशल्या के पुत्र थे, लक्ष्मण सुमित्र के।

परंतु राम ने लक्ष्मण को 'सहोदर भ्राता' कहा क्योंकि उनका रिश्ता केवल जन्म का नहीं, प्रेम, साथ और समर्पण का था।

लक्ष्मण ने राम के लिए अपनी माता, अपना घर, अपना सुख सब कुछ त्याग दिया और वन में साथ चले।

'मम हित लागि तजेहु पितु माता' — मेरे लिए ही उन्होंने माता-पिता को छोड़ा। ऐसा प्रेम सगे भाई से भी दुर्लभ है।

तुलसी का संदेश: 'सहोदर' का अर्थ केवल जैविक नहीं, भावनात्मक भी है। जो व्यक्ति जीवन के हर सुख-दुख में साथ दे, वह सहोदर से बढ़कर है।

यह पंक्ति मानवीय संबंधों की गहराई को व्यक्त करती है — कि सच्चा भाई वह है जो प्रेम और समर्पण में साथ रहे, न कि जो केवल जन्म से जुड़ा हो।

उत्तर: राम ने लक्ष्मण को 'सहोदर भ्राता' इसलिए कहा क्योंकि सच्चा भाई वह है जो प्रेम, समर्पण और साथ में जुड़ा हो — न केवल जन्म से। लक्ष्मण ने माता-पिता, सुख सब छोड़कर राम के लिए वन में जीवन जिया; ऐसा प्रेम सहोदर से भी बढ़कर है। तुलसी यहाँ जैविक नहीं, भावनात्मक सहोदरत्व को सर्वोच्च बताते हैं।

प्रश्न 4

यहाँ कवि तुलसी के दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त, सवैया — ये पाँच छंद प्रयुक्त हैं। इसी प्रकार तुलसी साहित्य में और छंद तथा काव्य-रूप आए हैं। ऐसे छंदों व काव्य-रूपों की सूची बनाएँ।

हल

इस पाठ में प्रयुक्त पाँच छंद:

1. दोहा — अर्धसम मात्रिक छंद; विषम चरणों में 13 मात्राएँ, सम चरणों में 11 मात्राएँ।
2. चौपाई — सम मात्रिक छंद; प्रत्येक पंक्ति में 16-16 मात्राएँ, चार पंक्तियाँ।
3. सोरठा — दोहे का उल्टा; विषम चरणों में 11, सम चरणों में 13 मात्राएँ।
4. कवित्त (मनहरण) — वार्णिक छंद; प्रत्येक चरण में 31 वर्ण, 16+15 पर यति।
5. सवैया — वार्णिक छंद; प्रत्येक चरण में 22 से 26 वर्ण।

तुलसी साहित्य में अन्य छंद व काव्य-रूप:
6. हरिगीतिका — मात्रिक छंद; रामचरितमानस में प्रयुक्त।
7. बरवै — अर्धसम मात्रिक छंद; 'बरवै रामायण' में प्रयुक्त।
8. झूलना — वार्णिक छंद; विनयपत्रिका में प्रयुक्त।
9. छप्पय — मिश्रित छंद (रोला + उल्लाला); तुलसी साहित्य में पाया जाता है।
10. मनहरण कवित्त — कवितावली और रामाज्ञा-प्रश्न में विस्तृत प्रयोग।
11. गीत और पद — भक्तिपरक छंद; विनयपत्रिका और गीतावली में।
काव्य-रूप: महाकाव्य (रामचरितमानस), मुक्तक (विनयपत्रिका, कवितावली), खंडकाव्य (बरवै रामायण, रामाज्ञा-प्रश्न)।

उत्तर: इस पाठ में पाँच छंद हैं: दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त और सवैया। तुलसी साहित्य में अन्य छंद हैं: बरवै, हरिगीतिका, झूलना, छप्पय, मनहरण आदि। काव्य-रूपों में महाकाव्य (रामचरितमानस), मुक्तक (विनयपत्रिका, कवितावली) और खंडकाव्य (बरवै रामायण) प्रमुख हैं।